शोध-सारांश

‘गोदान’ और ‘दो सेर धान’ में किसान मजदूर संघर्ष

वर्तमान समय में जो भूमंडलीकरण की आंधी चल रही है, उसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए मुनाफा मुख्य है, इस मुनाफे में सरकारें उनके साथ हैं, इसी वजह से आज किसान अत्महत्या के आंकड़े 2 लाख के ऊपर पहुँच गए हैं। स्थिति यह है कि या तो किसानों की जमीनें जबरन बड़े-बड़े पवार प्लांटों के नाम पर अधग्रहित की जा रही है, या उन्हें उचित मुआवजे के नाम पर भ्रमित किया जा रहा है, जिसके कारण किसान अपनी जमीने बड़े-बड़े उद्योगपतियों के हाथ बेचकर मजदूर बनते जा रहे हैं। किसान कर्ज के जाल में फंस रहे हैं। किसानों के लिए खेती घाटे का सौदा साबित हो रही हैं ऐसी स्थिति में किसानों के पास गांवों एवं शहरों में जाकर मजदूर बनने के अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं बचता है।

किसान-मजदूर संघर्ष आज के समसामयिक परिप्रेक्ष्य में ज्वलंत मुद्दा होने के साथ-साथ भारत में किसान-मजदूर की स्थिति को भी व्याख्यायित करता है। प्रेमचंद का उपन्यास ‘गोदान’ और तकषि शिवशंकर पिल्लै का उपन्यास ‘दो सेर धान’ इस बात के मुकम्मल गवाह हैं। प्रस्तुत शोध-विषय निश्चित रूप से कई मायने में बेहद महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। यदि इन उपन्यासों का विश्व पटल पर अध्ययन किया जाय तो प्रेमचंद और तकषि के उपन्यासों में चित्रित किसान-मजदूरों के संघर्ष का सामाजिक स्तर अथवा उसमें व्यक्त किसानों की स्थिति एक समान है। दोनों ही उपन्यासों के पात्र अपने-अपने स्तर पर संघर्ष करते नज़र आते हैं। प्रेमचंद और तकषि ने समाज की परिवर्तनशील प्रवृत्ति को दिखाया है। आधुनिक युग में सभी किसान-मजदूर अपने ऊपर होते अत्याचारों एवं शोषण को चुपचाप सहने के लिए तैयार नहीं हैं। वह अब संगठित होकर अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरूद्ध विद्रोह करते हैं। प्रेमचंद ने इस विद्रोह के आरंभ का चित्रण किया है और तकषि ने इसके विकास को चित्रित किया है। दोनों उपन्यासों में आर्थिक दृष्टि से समाज में तीन वर्ग मिलते हैं-उच्च, मध्य और निम्न। समाज में उच्च वर्ग संख्या में कम हैं लेकिन देश का अधिकांश धन उनके हाथ में है। अधिकतर लोग गरीब हैं

खेतों में काम करते हैं खेती ही उनकी जीविका का एकमात्र साधन है, और यह वर्ग जीवन की प्राथमिक जरूरतों के लिए भी तरसता दिखाया गया है। प्रेमचंद और तकषि ने दिखाया है कि किस प्रकार उच्च वर्ग अनेक तरीकों से किसान-मजदूरों का आर्थिक शोषण करता है और देश में कोई भी ऐसा नियम-कानून नहीं है जो इस शोषण को रोक सके।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसमें '**तुलनात्मक साहित्य की सैद्धांतकी**' के साथ-साथ तुलनात्मक साहित्य का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, तथा इसके महत्व को विश्लेषित एवं व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। चर्चा के क्रम में मैंने '**भारत में किसानों की स्थिति**' को दिखाते हुए इसके अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों का वर्णन किया है। इसमें मैंने '**रचनाकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**' दिखाते हुए प्रेमचंद का जीवन परिचय तथा उनके साहित्यिक, विचारधारात्मक पहलुओं को विश्लेषित करते हुए तकषी शिवशंकर पिल्लै के जीवन परिचय एवं उनके साहित्यिक परिचय का विश्लेषण किया है साथ ही इस शोध में मैंने **'गोदान और दो सेर धान में किसान मजदूर संघर्ष'** के तुलनात्मक स्वरूप को व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से इसके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं किसान मजदूर संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया गया है।

अतः प्रेमचंद और तकषि के उपन्यास 'गोदान' और 'दो सेर धान' की तुलना का यह प्रथम प्रयास है। दोनों ही जन-साधारण के लेखक हैं। दोनों की साहित्यिक रचना का उद्देश्य खेत में काम करने वाले अछूत किसान मजदूर के जीवन तथा उनकी समस्याओं को उजागर करना है। इस तरह समान प्रवृत्तियों वाले दो भिन्न भाषाओं के साहित्यकारों के उपन्यासों में चित्रित किसान-मजदूर समस्या की तुलना द्वारा उनके संघर्षों को अभीव्यक्त इस लघु शोध में किया गया है।

Research Summary

"FORMER LABOUR STRUGGLE IN 'GODAN' AND 'DO SER DHAN' "

At the present time there is a global storm of blows in it's, profit of multinational companies is the main, government is with them in the profits. This is why formers suicide figures reach over two million. Position that either formers land forcibly huge religions in the name of power plant is being acquired, or they are being misled in the name of fair compensation, because of which the farmers selling their land to the industrialists and becoming laborers. Farmers are caught in debt trap, forming is proving to be losing proposition for formers. In this situation, there is no option left other then to more towards cities for work.

In today's contemporary perspective struggle of workers- formers along with the burning issue in India also explained that the status of formers workers. Premchand's novel "Godan" and Takshi shivShankar pillai novel "Do Ser Dhan" complets this witness. Present research topic in many ways, of course, is very important and relevant. If these novel are examined in the international level then the struggle of workers, formers explained. Characters of both the novels seem to struggle on their own level. Premchand and Takshi shown the change trend of society. All the former's and workers of modern era revolt against tyranny.

Premchand depicting the uprising started and Takshi is featured in its development. Three class meet in economic society organization from both the novel – the high, middle and low, but the number is low in the upper class society of the country, but most of the money is in their hand.

Most of the people are poor form whose means of livelihood is forming, and this class has shown years for the needs of life first. Premchand and Takshi, showed how many ways the elits economic exploitation of laborers – formers, and there is no rule of law in the country to prevent exploitation.

Sumbmitted dissertations is divided into four chapters in "**Comparative Literature Dogmatics**" comparative literature as well as the meaning, definition, nature and its importance has been an attempt to describe and analyse yew. I in order to discuss **"the situation of formers in India"** showing under its social economic, political situations described. **And in this I described the personality and works of creators** showing Premchand literary biography and his literary analysed tailored to the Takshi shivshankar pillai analyzed, **As well as the research "Godan" and "Do ser dhan" former-labour conflict ave.** explanatory comparative method throught comparative nature of its social, economic. Political yew peasant workers have attempted to show the conflict.

This is the first attempt to compare the novel of Premchand and Takshi, Both of them is the writer of general public, both these working

in the field of literary creation aimed Ave. Untouch peasant laborers life and to highlight their problems. In this way the writers of same trend of different languages composed the former – labour problems by comparing the expression of their struggles in this small research has been.